



१ नाम १ नाम १ नाम १ नाम
१ नाम १ नाम १ नाम १ नाम

८४ महाभाषाशास्त्राचार्य

८४

आभा प्रकल्पि	3119	
ASPA ARCHIVES		

१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अत्रि न गङ्गा नृपि न सः म
 उलमश्च सुनाद नृपि रवा गमि न ॥ १ ॥ कात्र वि
 गृहा वसु दि य लि (न न पृ षा कं क लि स्या य नः
 म न्ना ॥ अ म्ब अ म्ब कला मि क ॥ आदि पी (० समूह
 न यं वा स नृ पी ० मा स न व द्धि क यि ल र्ग का (०

मा १

सुनत्तादियुवा धनी ॥ विसर्ग न समूह न वा
 नृ व य न म्ब नृ रु का ना र्द्ध कला धने सुना
 रु न र्व (० मि क ॥ वि द्रु सु र्व व च द्रु सु क व नीः
 य क मा श्रिय ॥ देवी नी गुरु व ना व रु द्धि क य न
 म ह नी ॥ ० ॥ व न न ग न स्या न अ ह न य वि ह

दिन ॥ कूट सुद वद वंशी यागयी ॥ ० द्यव सिद्धि
दुर्गा माग्न्या दिन हीम मम लान्क क लो य ॥ ० ॥ अ
वर्ल च निजा वर्ल लय विष्णु मका निनी मम लान्क
महादवी डांका नयी ० मा ० न ॥ दवी ज्ञान धन
माय पूर्णुयी ॥ ० ॥ अ ॥ ० ॥ मू ख लं च काम भव नी की

न यागिनी कामा सुयक ॥ माया लं रं नवी ग कि
नायिकीयी ० यं च क का ली लं रं व उ कि न्या ॥ अ
द्वयी ॥ ० ॥ भव न भव नी ॥ लं च पी भ ययी ॥ ० ॥ लं माया
कुमलुल यं च पुन वम ॥ ० ॥ सु पूर्णु व कुल मा
ननी माह च क सि न्ना दवी यथौ गि निय निव ना

लंचमीठा कि लामाया जलमय निन ज सा किंकि
 लिङ्गाल द्यानीच वीना पुठ हं डू डू ति ॥ विष्णु म (ध
 मर्स (धमु विष्णु म समा सने ॥ हीयु का न म न सा
 के मा न म नु न नू यी थ न का ना सन मा नू रा वि
 दू नू य विष्णु गत डौ का ना वी ड नी द वी डौ डौ

३

डौ का न ह दि नि ॥ या य की या य की वल्लु याना
 लो वानि वा सि नि ह म ह म व नि द वी ह सि
 नी ह स म (ध ग ॥ ह स ना द ख नी ही म व क द
 ह ज (ध मू ख धुरु ग वि म ल मा न य या ह न
 व ल ह ॥ व डू नू य ख नू य च न डौ डौ स म या व

न. **कौ** काल सि सुला वलि. **कौ** **कौ** मनु बनू पि
या॥ मा या नू प व नी द वी ग ड जि द ग डे ष त्रि ॥
ब म व वि दू जि द्वा च **कौ** **कौ** दू र ग र व स्य च ॥ ह
व इ व र वानी न उथ सु उ व द नी पु षा न य न मा
नू ५. य त्या षा स क म ष व नी ॥ ७३ **कौ** चै व ७३ **कौ** चः

७३ सि न च उ ७३ ना वि प ज्ञान च य नि ज्ञान च ७३
म नी क म रू वि न ॥ ७३ का ल या थ क वा **कौ** ७३
का न त्व च व व नी **कौ** का त्व उ ल नी डी **कौ** का
त्व च ७३ ष व नी ॥ ७३ का त्र ना य की न दा ५
नि त्या न च य द न ना मा या त्व स चै लै सि द्वा नी

संस्मिन्नात्र दुःखं भवति ॥ भूमानं यत्र भूमाय भू
तिव भूमानं भवति ॥ भूमा भव भूमाय भूमाय भू
द्वान्ते न गत ॥ यत्र भूमा दिव्यं किं स भूमानं सु
नवा स भूमा स वीर्यं भूदनी क्रीन जीवनाति गतं सु
र ॥ दूरे दूरे कान्तमनु सु वन स सुद स उगान् मनु

व स यद गोपि ४ सकृन्ते न समा श्रित ॥ अलमान
मिना चक्र विवाद विनिकृति क दूरे च दूरे निरा
कात्र उदूरे उ वगानन ॥ सका वि स यद सुद ४
स विंश यदा सु वक्र नायि किं का कालि ४ ४ ॥
नी कलमा श्रिय ॥ सिद्धा यं वा स सु यन कमल कम

लक्ष्मी अक्षहाससमूह न हंशमल। हृदि न ॥
साम लुलम (धरु मायाव सुत्रे म लुल ॥ त्वम विम
लुलान्क रु ~~सिद्धि सव न द वी आका स इ न वि~~
द्वेदाय दिक्क ५ म ह ध्वनी ॥ वायुय (गमनान्क रु
यनायत्र विसृष्टिनी ध्रुवा ध्रुवा न नाव रु मात्रनी

सिद्धि सव न ॥ निनाल भगव न द वी आका स इ न वि
कुमन रुान विज्ञान ग रीत्र (गार्प न य च क वल ॥
स्मिनि स्वय क नी द वी जननी न ख म न ख म लुल न
वानां कौत नी हा कि आनन दु विरु द नी ॥ मा न नी
सर्वे द वानी म म प्राला वि य उ म वि स ध्वनी ऊ न

क्षणं संयदाययुदायन ॥ नमस्तु नमनिर्बोनिज
 गद्यानिमहासिक् स्मर्तुं ययुर्वै सुहृत् नमस्तु
 विगुहा तुष्टावययद स्माक मायावं विद सत्र मि
 ॥ ॐ निमायास्तुर्वपाकं यागियुगीकुस्मागर्तं नस्या
 वनानेकत्रुर्त वडी कायी ० देवना ॥ ८६ ॥ यमात्रा ॥

ॐ संयकि ४ अ वस्तुनद्वेत्त न ४ ॥ सर्वयाय विनि
 मूक्ता तुवन नद्वेत्त न ४ ॥ नमस्तु यून नावर्त्त माया
 सुवस्तुदी नद्वेत्त न ४ ॥ ॐ रुवपायुया मूक्तान् लार्त्त पु
 जाय सधिय ॥ अ वस्तु कर्म मूक्तस्य योनय योनय नस्य
 य ॥ समाध्या नययुक्तस्य गीयास्तु संयवर्त्त न ॥ ३२ ॥

ॐ निमाहा सुवाधिका भानाम नन्द मन्त्रमाहा ॥
माहेया श्मार्तु समाधि ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ नमः
तु काये ॥ अ नमः दया ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ यागच
दवमपि दुःखरत्नं नीनामिके धुन्यपद न्यङ्गो
हीषक विष्णुमपदयु विष्णु ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

ॐ विलीनं दया दधे विमूर्का वदु चिले दया ॥ क
वल्यामा (ग) सुवि सुद दह ध्यायं चर्षा हानकली
व कासी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ स्मन द्वाद दहा वात धा वृद्ध दल उ न्य
सु पूर्व नन (ग) सुग्रा कुल हीन दिव्य लय न व कन
दह सुद वल्लु न ध्यन ति ऊ ना दनयी भन को

न कलाय स्यात्ता उहा चि न यं नि नियं नं डाद्यादि
कालीगर्गा ॥ ३ ॥ अत्र कान्ता नृक कृमां सूरु चि नृ ५
मारु पूमा विवत् ५ मस्यामयला हा कं हात्र लिताः
ल्लिना हा निन्दु पु री वायु स्या वि क था नि ना रि रु द्य
गी वा न दू ग्या त क ना लु द्या न ध नू रु दू र्द इ र्द रु लः

क हा मां नु गी र्यो लय ॥ ४ ॥ व वं नी म मृ नं शि यी न
व स नी स र्क क वा उ स्मि नी मू ल्य स फ द सा ध र्क क
य शि वा रु क्ता न मा क र्मा च ४ व या क्ता ल य त्रि वृ ना
स व हा हाः वा ख व नी स र्व दाः नी द वी र्व व ध मा क
क ली दि न रु क्ता नी ॥ ५ ॥ जा द वी यू ग व द स फ क

कसचा छिवा ना थात्मरु शीय नि शी नू दु हा हा दा
छिवा न क छिवा ना था न ना दा द्वा का ॥ हा वा हा व वि
व छि ना स न म र्या सु द्वा य ना का य ना हा कि सर्व ल
या त्य सा त्य न नू ला ला का लि का नी म्प्र हं ॥ ६ ॥ **उं क**
सी हा य न म क न या स्वा वि मूर्त्ता विलीनी रु काला

आ कूल विकूल सी सफ कूटा कर्म ग ॥ छिल्या या यः
पु न न ल कलि दि य उ पु पु रु वा क ल्या या य पु रु व
उ वि रु या द वि रा सा न मा मि ॥ ७ ॥ ना नी ना नी
स्व य नि च रु या जाल वि शेष क र्त्ता सी प्रा ला क ष य
य नि य न स्व द्म रु सा दि या यं रु द्वा वी जा द्या व हा नि

शुभं सयकमुष्णसन्नय ॥ ॐ नमो देवीयनमविमला
गुह्यकालिनमामि ॥ ८ ॥ ॐ नानाष्टयगजमहा
शंक्रकालप्रवण ॥ श्रीमन्मन्त्रोक्तयनमविमला
सुखलोकसिंहा ॥ ९ ॥ सादृताहिननवलवेवाक्रादुर्न
म्यादष्टस्या ॥ १० ॥ नमो देवीयनमसुखदा गुह्यकालि
नामी ॥ ११ ॥ मषट्चक्रावययथगना षट्छुजाद
शन्नय ॥ स्वामिन्मन्त्रागमनमहासुखमंगुलिदती ॥
हाकानागाजयजयमहाष्टादष्टादष्टमगा ॥ श्रीद
वीशीकर्मयथगना कालिकाष्टमनामि ॥ १० ॥ ॐ
निशाकालिकासुखसमायुक्ता ॥ ११ ॥ ॐ नमो

नामी ॥ १२ ॥ मषट्चक्रावययथगना षट्छुजाद
शन्नय ॥ स्वामिन्मन्त्रागमनमहासुखमंगुलिदती ॥
हाकानागाजयजयमहाष्टादष्टादष्टमगा ॥ श्रीद
वीशीकर्मयथगना कालिकाष्टमनामि ॥ १० ॥ ॐ
निशाकालिकासुखसमायुक्ता ॥ ११ ॥ ॐ नमो

१॥ धी च शुका वा लि चो ॥ धी नाम च उवाच ॥ का नू
दम नद् सू दू न नू या ह दू वि ला का व ना रु कं मा म
न व स्मि नं ह व य थ धा नुं नि ना नं धि व ॥ सर्वा ह १९
ख च या न वा ध्य स ह सा धा सि द्वि त स्त्री ध्व नी स्व ध
म

मं स्मि नि क्ते दयं दू नी ल स त्वा नि पु य च्छ य य ॥ १९
वा कु दि मो न म य मा म क दि नं पु र्यं ठि न र्व व प
दि यं द वि स ह र्व मा न रु दि क्ते १९ स द ध्य न द्वा नि
क ॥ ना ग द्ध र व ति पु पु वै वी ह न नि रु न मा सी न वा
या ल स नू लं क द्ध क डि नं वि सा क क न ना द थ्या द

यीलीलया॥दर्शदर्शमिदमदीयदृश्यविस्मा
नरागमकलंआरुनीवसूक्ष्मसद्वचसाधिकन
कात्रन्यन॥ध्यामहेनवहेनवीप्रियनमस्वराविन
नाअसा मामूअयनिमूकिअमनिमहासोष्यपुद
संक्रियसद्यालंयनमधियस्यपनमस्यमनुनला

चैतन्यनागम्यविम्वविउमनत्रेरागायवर्गो
एदादमासीकत्रिनस्यभयनिदिनमिथ्यासि
मानास्वना॥वायात्सर्वज्ञतादिवस्यसकलमार्गन
संलक्ष्मी॥नस्यादहियगायनामूरवसर्गयादिय
दानिहृनिस्लाकयूअनभारुवमिसर्गनयस्यगिन

यद्वासाय ॥ माद्वस्य समूयागनस्य सकलं ज्ञेताकः
मानरु ॥ ॥ ह्यलं नियुक्तु तावक्यमूचि न यद्वावि न
लं कृत् ॥ स्मात्र स्मात्र समीयवीर्यविरयं स्वसद्वृत्त
ननं दिव्यं नागमर्णयदाय निवर्त्य ॥ यका नमस्यं दु
न ॥ सद्यानामूखवानलं कृत् वना रुकस्य भसं ननं

माहात्म्यं हि सनां नदव धानलं यातस्य नदु कनं ॥
आयुदेयनम गिरु काननं नूय हिनीलं सदा
कामी (ध्व) निष्ठिवानन युगदिने ॥ सर्वं न गीयनं ॥
नदाग्मानसकलननस ननं कथनचलं न मामान
॥ यवियार्यससू मदिने नच सदा गीयनी ॥ कार्य

यद्यदि वदया मिनिन नी दा सात वल के स दूष्ण
रावन दाशु या मि सन नै च नान सं सं न्य न ॥ वृथ न
यु विचार्य नी क विषय स भ वि न ४ सा म्यु नै स्व ज्ञ स्व
न न्य मू ग हा हु न द ४ मा प स्य न ४ य न्या नि ४ ॥ सर्व
स्य वि वि व न दा र्थि न मा हा स्य न ४ य मू ज्ञा न र्य द्यो

रवी द्या न य नि यु वा ध वि क स स्त्री न यु वा ध यु रा ॥ मा
हा स्य न व ना व द व न मि दं जी गी य न स च दा त
दा स्य स मू पा ग न स्य म म कि का ध्रु व म द्या वि ना ॥
ह मा न ४ म ४ ग न स्य क द ४ पा फ स्य सं न द ४ वृ च
की रु म हा ४ या ४ सू क नि ना म र्यो अ वि यु धि ना ॥

ॐ श्रुतं ननु विचार्येदं विप्रचितं ॥ यत्कार्यं मायैव ते
सत्कृत्यं कर्तुं यत्र निविशद रक्षासूक्तं ननु ॥
याया (ॐ) वचनाचरं युनिदिनं त्वं लुद्धि विद्वमनि
स्वात्मिस्त्वाहितनक्ततावत्र हिना दद्यादद्यावत्स
ॐ श्रुतं ननु सासुयूक्तं ननु ॥ १ ॥ स्मितायुता नि १

सर्गं सत्कृत्यं यमनक्ततावरवचिनं न स्मान्न (ॐ) दूजर्ग
ॐ ॥ १ ॥ कुक्षदर्थं नात् दिने दिने ॥ १ ॥ सर्वोयि सर्वोमना
दत्तं वा श्रितवत्सु सिद्धिर्गमिन् सिद्धयवस्यं मम ॥
ॐ श्रुतं ननु विचार्ये निर्मलदृष्टं ॥ मन्मानसं भादवं नि
शान्तदत्तं सालसद्धि कासूरु (ॐ) प्रादामवत्सु ॥ १ ॥

स्य द्वास्मिन्नादमूर्तिरुचिन्त्रदासनावस्तिनास्
ह्मासासत्यादियववदनायंदादिद्रव्यं विवा॥
तं विध्ययुक्तं द्वास्मिन्नादमूर्तिरुचिन्त्रदासनावस्तिनास्
म्रायनीहसदाजयस्यमूयदमस्तिन्त्रदासनावस्तिनास्
४॥१॥ निष्ठाकात्रुल्यसुर्वसमायं ॥ ७ ॥ १॥

ॐ नमः शिवाय ॥ यादविमर्शकेटहयुष्टामनीः
यामाहिवात्मनीयाधूमाद्वनचुममुमथनीः
यानकवीयाहीनी॥१॥ काशुक्निधुम्बदेषद
लनीयासिद्धिलक्ष्मीयनासायकानवकीटिहा
किंसदिनायाउमासाकालिका॥ १ ॥ मानम

आर्य समाज

ARCHIVES

3119

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मधूकेटरु शिमहिषः प्रालयहानाद्यम हलानि
क्षितधूमसाचनव (पहचलुमृष्टादिनी ॥ निःश
सीकननकावीकद नूत निर्य निधुक्तावह ॥
मृधं सिनिसं हजासूद्र हि नै इ (ननमसु मि क
॥ २ ॥ सिंहस्य गति (हायनीनकनयस्त्रिभुज

हिरुजो हां खीचकधनू ॥ १ ॥ नीष्टद धनाने जे जि
हि ॥ १ ॥ हि ना ॥ आजका गद हानके वलमृष्टा
शकननचूयना ॥ २ ॥ इ न्ना इ न्ना नि ना निनीरवउम
नलेकलकृष्टा ॥ ३ ॥ याहीयद्रवनकदम्वः
हिखन नाजा नूदकं न (१४ न याष्टन (थरुयव

नमो जामीकनयुरा ॥ ८ ॥ विष्णुयस्यसिंहस्य
सुखीतिहादीश्वरी ॥ नमो कर्णिकिंदिधरुखा नाड
माननिगीयन ॥ ९ ॥ सिद्धिचलुमहासाया रुव
सुखलचयुयद ॥ आयदानवनात्रकि यननिबोला
दायिनी ॥ १० ॥ विष्णुयस्यदगां निर्यासिद्धिलक्ष्मी

नमाम्यहं नाडदाधनदांमाना नाडलक्ष्मीनमा
न ॥ १२ ॥ ॐ विष्णुविददगां जमनमहायागसि
द्धिचलुसुखसमाद ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॐ नमः १४
सिद्धिलक्ष्मी ॥ १५ ॥ यदथउवाच ॥ नमामिसिनसा
दवी सर्वेन १४ सिद्धियागिनि ॥ यद्यसादादयं १४ कि

ब्रह्म नि सह जायता ॥ १ ॥ न नानमा मि यु य नां स
व नं सि द्वि मा न न ॥ समू द नि य न स्म न य दी य च
न न च ना न ॥ रु व न रु व स न्का य हा नि लि स नः
नार्थि ना म न मा नि त्या दि ना न द न दि ना र्थे न मा
न म ॥ ३ ॥ स क ल क ल च त्व ना यि का ख न व र्त्त ॥ द

त्वा रु ग व नी म न्त्र यै श्व लि का वा लि नी उ म ॥ ४ ॥
न न न व न वा ल ख स्म त्वा न व रि न द न ॥ या द वी
नि रु त स्म न नी रु व नी उ म ॥ ५ ॥ अ म लु म लि स
दा ह य न य न स ह सि नी ॥ नि र्वा ल मा ण्डी द द वी
व सार्ज न दि दं ज ग न् ॥ ६ ॥ वि व मा य न व न् र्त्त य

सुभानमालिनी दुनिना निदम कृष्ण दलनीरु
गवनीउम ॥ १ ॥ दवी सर्वोपदी वोधि गनणीति
उगमिनिम् ॥ लीं मिहामुण सर्वेणु ठागुयुसमनि
नमः ॥ ८ ॥ अगच्छागच्छवनद हंसदवीयूनः ४६
यूनः ४ वल्लभल्लभ उगमान सर्वो हि ह विधायनी

॥ ९ ॥ लमवयुष्म दिगिर्नर विनाक वसाकना ॥
अकवेहि सर्वे सगु कालि कव गिखा वहा ॥ १० ॥
गत्सगुममानद महालैह कानगविना ॥ सर्वे म
देमहादवी स्वाहि स्वाहि मह ध्वनी ॥ ११ ॥ ॐ
छादि विनिष्कसन निदि चिदि यूनः ४ यूनः ४ ॥ वि

मला नाम ख (है) न गादय दू दय ध्वनी ॥ १२ ॥
नावरु लु लिनी दय वि वि मला न रा सुन ॥ यः
न स्वया वययै न मम सर्व म न न न ॥ १३ ॥
साहि कार्गि क द वी महा रू न व न वि नी ॥ म म
मु म न्क मा ना स स च ॥ सु न व न सु ना ॥ १४ ॥ ज व

ला क य मा मा सु द वी यु ध न व न ॥ महा का नि
न म र्क सु काल ना स नि न न म ॥ १५ ॥ उ च्चा ट य
स म ॥ कु य णी द य न म ध्वनी म न ना उ न ना या
नि य ॥ सु ना सु न क न्य की ॥ १६ ॥ मा य म हा ल क्षि
व क ला र थ मा हा ध का र्गि नि ना नि वा र्य ॥ च च ॥

दिकशाविहदमनमयकाशयानुगितस्वरा
वा॥ १०॥ आननदहसुप्रदारुणवनी, आत्माय
थसुनया, सारुकिप्रगियाभियूदमनसा, सि
द्धिचिनामवेयन्, सर्वोसंयदमावहयहनह
संपूर्णपूर्वोदयः नवानामिसदक्षिर्नगिरुव

नीयाहासनीकाद्यनी॥ ११॥ यद्दंय०नसु
न, धात्रयदुधनिर्मिर्न॥ सर्वसंकननसिद्धे
गवत्यायसादन॥ १२॥ हलायन्त्रयासाका
किउन्क्रयासुमडद॥ लगेचमचुडमगानीवि
हाःकनननेस्मिनि॥ १३॥ नित्ययदुधयामसम

कान् विद्वि नर्व समाय ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ नमः ॥
पुन्यं मिनायेन मः ॥ त्वं द वी स च या पि विद्वन्
नमिनां यं च व कु वि न जी सर्वे ॥ गुं न नृपां स्तु
तिक मनि निरां च द का टि प का सी ॥ वा भ द द
स सा सी रु उ द हा क यू ना हा रु सं हा न का नी ना

स २

स ३

द वी सिद्धि लक्ष्मी मरि सत रु ल बां भा द सिद्धि
पदा नां ॥ १ ॥ ॥ ॥ सा सर्वे ह वां कि नि टि म कू ट
या के यू जा ह रु सा सी पा दो पु ह्यो सा सी मनि
मय ख चि तं नू यू जी व द यू ग्मी ॥ ना ना न क्षा य यू
का कि नि कि नि न व नं म ख ला व त सा सी सा

यं ध्यासिद्धिलक्ष्मीं तिरुवन्नतमिनीं बुद्धसिद्धिः
युदानां ॥ २ ॥ ॐ नमो सिद्धियुदानां तिरुवन्नविः
जया (ध्वनवस्तुं गारुषां ॥ मुक्ताहारं सुसाहा मं
निमयस्वचिर्नं यद्ममालाविह्वलां ॥ हस्तार्कं कान्तं
रुषं वदु विविन्नचिर्नं कर्कनात्तयूकं सयं

ध्यासिद्धिलक्ष्मीं दनिन्नहयदानीं तिरुकि सिद्धियुः
दानां ॥ ३ ॥ हस्तं धत्वा सुसाहं तुजदहा विह्वलां
मुष्मुसुनीं ॥ वामं कायालमाद्यं विविधधुः
नकनां हस्तं सुसाहं ॥ दक्षं हस्तं सिमाद्यं तुजानं
हिनकनां विद्युगायसाकीर्णं सयं ध्यासिद्धिलक्ष्मीं

अति विनिगनाया याहु मां सिद्धिचक्र ॥ ४ ॥ क
लेहाने वरुषं मनि मय सकने नान का वत्सु सा
रं ॥ साहा स्वर्ण वृय स्या हाणि न के न ल रुना ना
त्रिय म्येय का स ॥ हानू य स्येय दीप दहा दि हा कि
न ले स्येय का टि स्वभ का १ सयं हा सिद्धि ल श्री ज

गन दिन क ना सर्व सिद्धि पुदाना ॥ ५ ॥ श्री व द्वा
स्येन वरुं सख द हान व की विस्त्र ना गव न द
न ॥ न खन काय मान न विहा नि कि न ला श्या नि
न ह स माना ॥ विभा शी चानू न या व द्र वि धि न चि
नी कुलु लारु खि क (१) ला द वी सिद्धि ल श्री स

कनूला कयया ताव सिद्धि यदा नी ॥ ५ ॥ गुरुनाः
 साम्गलु सुनति न वहनं यद्गुणै येवन गुं वकी
 पाकि वधुत्वा पुनि मूरव सकलै गुनै व साह
 सिद्धना कृत्त मोली दि विषय विसम सा रुमा
 लल लाट ॥ सर्यं धी सिद्धि लक्ष्मी वि य थ गानियू

ना मनु सिद्धि यदा नी ॥ १ ॥ नूडा नूर १ वम का १
 गिरुवन वि दि नातु कि मु कि यदा ना ॥ सिद्धि ल
 सर्वरु ना १ वि वि व व सुनला स्म व ला डा ग माया
 उ व सु वि य का ने गिरुवन जननी मातु सर्व व म
 कृ ला द वी सिद्धि लक्ष्मी नव सनन मया सिद्धि

द१ साधकानां ॥ ८ ॥ नृवं सिद्धि कर्तुं सर्वं सुयथा
नं, या के व वीचुह लं, नाती थं च समसुद्धु गामह
नं, नास्ति सभा गह लं ॥ यं यं पार्थयते व कामसः
ह लं, तु किं ध्यम किं पुदा १ न सर्वं ह लदा यिनी वि
जयनं, शा सिद्धि लक्ष्मी नम ॥ २ ॥ ॐ निष्ठा पुत्र्यं गिः

ग्राह्यं सिद्धि सुवस मायं ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ का ना सत मादरा
वडव द्या य नि सि ता, व धु न ग मा द वी शा उ डि
कानि मा म्य हं ॥ आ धर्जनं त्व दि धु नां, य द नू य य
व सि ता ॥ नृ पा नी ना ध्या यानि त्या, शा उ डि को न मा

स्यहं ॥ २ ॥ लुप्तव काह वादवी कृपयी । भयनि
स्मिता ॥ आसुरय कनीदवी शीतु डि कानमा
स्यहं ॥ ३ ॥ यासाउउ डि काद कावी उगथा निव
लागमा ॥ गमागम विनिमू का शीतु डि कानमा
स्यहं ॥ ४ ॥ हेनवे मथनाग कि साधिसून स्वः

रयिनी ॥ अनन धर्म लीदवी शीतु डि कानमा
हं ॥ ५ ॥ मालिनी विद्वन्मथन पूनय निवलाचल
यश्चरुगन सनेव शीतु डि कानमा स्यहं ॥ ६ ॥ अ
नाह भ म हागध शिवाई मनि (ग) चन कृशो
किनालचकस शीतु डि कानमा स्यहं ॥ ७ ॥ ॥ ४५

अदहासायौहासायायनायनविसर्धिना॥र
त्रिगावसुगारुयाष्टाऊडिकानमाम्यहं॥८॥अ
शिनीमाननायेवअष्टअनामिकागथात्रयीदीम
नास्मनीयेवष्टाऊडिकानमाम्यहं॥९॥हावाना
नाकमीपम्याअनमस्कयदस्मितारत्रिगावसु

गारुयाष्टाऊडिकानमाम्यहं॥१०॥सिद्धिचक्राः
दैवादैवीविद्याधनेयष्टे४याशिनीगणवृद्धके॥
वाङ्मन्यननादवीष्टाऊडिकानमाम्यहं॥११॥
रत्रिगावसुनवीयुगामाखनगामिनी॥मिष्ट
मानपुरुदवीष्टाऊडिकानमाम्यहं॥१२॥ॐ

य तदा दष्टा मुकुं कृदिका यत्र मष्टनी नि
द्वि सिद्धि युदा दवी धी कृदिका न मा म्य र्द ॥ १३ ॥
ॐ निष्ठा मल्ल नरु न व कृदिका दष्टा मुकुं स
मा र्क ॥ ॥ ॥ ॥ १४ ॥ चतु का वा लि न्ये ॥ सह मा
ना कृष्ण दवी च दि का य स स्मि ना वि र्य व न न

संयुक्ता दष्टा वा द्रु म हा व ली ॥ १ ॥ यं चान नां म
हा द वी हा न क यू न सा रि न दि या मृ ना वि र्व नी
ॐ सिद्धि यु द्वा श्रि या न म ॥ ३ ॥ अ य द ष्ट व ना
न नी य न नि के वी ल दा यि नी ॥ वि ष नु य द न नि
स्था सिद्धि त न्नी न मा म्य र्द ॥ ३ ॥ वि ष दा ष वि वि

निद्वि कि नाय प्रय विना सिनी, हं सिनी यत्र मादवी
सिद्धि लक्ष्मी न मा म्म हं ॥ ४ ॥ उ म्म स न द न य न्नां रे न
वी रे न वा स न्नां ॥ मा गा वी ना व ल क्ष्मी, कालिका क्रम
व धिनी ॥ ५ ॥ गज काल द कौ द या द्वि द्दु हि न द्य
न द्य ना टा य सं द द च छे, त्वा कालि ना नु यं गी, सक

न वि वृ थ य ह द य का ट ना ली न लि गी ॥ ६ ॥ सा ध्या ना
स च्च वि ष्व द्द य द न म यि य न्, का ल्य का ली का लाली
या या द्वा व क्ष मा ना १ कु ल क म ल व नी, रा स का सि द्ध
का लि ॥ ७ ॥ स र्ग हं का न रा डा णि न सि षा क नि ना
व द्म ॥ ८ ॥ व द्म मूर्त, का धा द्दु च्छु दं दा दि णि दि णि

विविधा ४ संयिक्तायायियस्यो, सनाहुर्द विधले
 त्रिजगदधिवनियन्, यप्रसादननृद्ध ४ सामृद्धा
 प्रष्टु, त्रिदशवदनूना, चतुकायालिनीव ४ ॥ ८ ॥
 यादयिसिद्धिलक्ष्मी, हनशिननीलयाज्ञानशक्ति
 ४ यनशी ०० ॥ ४ ॥ कि ४ सूबूनानिलयगनियूनाः

कृष्णलीमाङ्गलसंस्तु ॥ २ ॥ अथाहाकिदेवेहायन
महाययूगाहाकिसंलनगतायस्योऽकीठाथम
गसृजविलयमिनायाविधरुं सूत्रणी ॥ १० ॥ यन्
सूक्ष्मवर्णमकं यनमयनगर्नं गन्सूषुमाननसु
रुतेऽयंयऽविहिर्नधयदमृगमयंयागिनामद्य

